'पद्मावत' का सच

● हूबनाथ पांडेय

इतिहास, साहित्य का महत्त्वपूर्ण और प्रधान स्रोत रहा है. हमारे दो महाकाव्य रामायण और महाभारत के कथाबीज इतिहास की ज़मीन पर ही अंकुरित हुए हैं और आगे चलकर ये काव्य भारतीय साहित्य की प्रेरणा बने. यहां एक बात स्पष्ट करते चलें कि साहित्य न तो इतिहास होता है न उसमें ऐतिहासिक तथ्यों की खोज से विशेष कुछ हासिल ही होगा. साहित्य एक तरफ मानसिक समृद्धि करता है तो दूसरी ओर इंसानी सोच का दायरा बढ़ाता है और बेहतर मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है. इतिहासकार को साहित्य से सिर्फ इस बात के प्रमाण मिल सकते हैं कि रचनाकार का समय, समाज और संस्कृति किस तरह का रही होगी, किंतु यह भी विवेकाधारित सूक्ष्म निरीक्षण, विश्लेषण तथा अन्य समकालीन स्रोतों से तुलना के पश्चात, वरना अंधों के हाथी की तरह रामायण में हवाई जहाज़ और महाभारत में दूरदर्शन खोजते रहेंगे!

जो हैसियत संस्कृत में कालिदास की है वही अवधी में मलिक मुहम्मद जायसी की है. हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में प्रेममार्गी निर्गुण भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जानेवाले जायसी को सूफ़ी कवि माना जाता है. लखनऊ से 107 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में जायस उत्तर रेलवे का एक स्टेशन है. इसी गांव से जायसी का नाम जुड़ा है. वे यहां पैदा हुए थे या कहीं से आकर बसे थे इस बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है, किंतु पद्मावत की रचना उन्होंने यहीं की थी. जन्मस्थान के साथ ही उनकी जन्मतिथि पर भी विवाद है. लेकिन पद्मावत के स्तुति खंड के एक दोहे के आधार पर जन्मतिथि खोजी जा सकती है. जायसी ने शाहेवक्त शेरशाह सूरी को आशीष दिया है–

दीन्ह असीस मुहम्मद, करहुं जुगहि जुग राज
बादशाह तुम जगत के, जग तुम्हार मुहताज

शेरशाह सूरी 17 मई 1540 ई. में कन्नौज की लड़ाई में हुमायूं को हराकर दिल्ली का बादशाह बना और उस वक्त उसकी उम्र लगभग 53-54 वर्ष की थी. इस उम्र के बादशाह को असीसने वाला निश्चय ही दस-पंद्रह वर्ष बड़ा तो होगा ही.

अपने एक ग्रंथ आखिरी कलाम में जायसी कहते हैं–

भा औतार मोर नौ सदी
तीस बरिस ऊपर कवि बदी

इस अर्द्धाली से भी कयास लगाए गए.

आखिरकार सन् 1476 ई. के आसपास जायसी के जन्म पर विद्वान सहमत हुए. इस तिथि को प्रमाण मानें तो शेरशाह सूरी को आशीष देने वाले जायसी लगभग 64 वर्ष के हुए. जायसी के जीवनकाल में बहलोत लोदी, सिकंदर लोदी, इब्राहीम लोदी, बाबर, हुमायूं और शेरशाह सूरी दिल्ली के बादशाह रहे. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार जायसी का निधन ई. 1542 में हुआ.

कुल पचीस कृतियों के रचयिता जायसी की सबसे लोकप्रिय रचना पद्मावत है. इसके अलावा अखरावट, चंपावत, कान्हावत, आखिरी कलाम भी विशेष उल्लेखनीय हैं.

संजय लीला भंसाली की फिल्म पद्मावती (बाद को नाम बदलकर पद्मावत) की वजह से हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम के बाहर जायसी सुर्खियों में रहे. शायद भंसाली ने स्वीकारा भी था कि उनकी फिल्म जायसी के पद्मावत से प्रेरित है. यह उन्होंने तब कहा जब फिल्म विवादों में घिर गयी थी और इसका विरोध हिंसक रूप लेने लगा था. खैर सिनेमा का अपना अर्थशास्त्र होता है जो उसके सभी शास्त्रों पर भारी पड़ता है. यहां हम जायसी के पद्मावत पर ही चर्चा करेंगे. जायसी संस्कृत अरबी, फारसी, अवधी के प्रकांड पंडित थे और संस्कृत साहित्य और काव्य रूढ़ियों से गहरे परिचित थे. अमीर खुसरो को गहनता से पढ़ा था और पद्मावत का कथासूत्र उन्हें अमीर खुसरो से ही मिला. पहले पद्मावत की कथा संक्षेप में–

किसी सिंहल द्वीप में राजा गंधर्वसेन तथा रानी चंपावती की पद्मिनी कन्या पद्मावती के पास हीरामन तोता था जो महापंडित था. पद्मावती के लिए दुनिया भर से रिश्ते आने लगे पर गंधर्वसेन किसी को अपने बराबर का नहीं समझता था. एक रोज तोता उड़ जाता है और एक ब्राह्मण की मार्फत चित्तौड़गढ़ के राजा रतनसेन के पास पहुंचता है तोते की पंडिताई से प्रभावित होकर उसे एक लाख रुपये में खरीद लिया जाता है. इसी तोते से पद्मावती का रूप वर्णन सुनकर राजा रतनसेन राजपाट छोड़कर पद्मावती को हासिल करने सिंहल द्वीप जाता है. कड़े संघर्ष के बाद गंधर्वसेन पद्मावती का विवाह रतनसेन से कर देता है और रतनसेन फिर कुछ मुश्किलों को पार करता चित्तौड़ लौटता है और अपनी दोनों रानियों संग सुख से रहने लगता है. राजा रतनसेन के दरबार में राघव-चेतन नामक पंडित है. राजा से किसी बात पर खटपट हो जाने से वह दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन के पास चला जाता है और पद्मावती के रूप

का वर्णन करता है. अलाउद्दीन राजा रतनसेन को दूत से कहला भेजता है कि पद्मावती को उसकी खिदमत में पेश किया जाये. राजा सुनकर आग बबूला हो जाता है और युद्ध ठान लेता है. अलाउद्दीन चित्तौड़ पर चढ़ाई कर देता है पर आठ वर्ष के घेरे के बावजूद बादशाह को सफलता नहीं मिलती. अंत में बादशाह ने रतनसेन से संधि का प्रस्ताव रखा. रतनसेन ने बादशाह को बाइज़्ज़त अपने महल में भोज के लिए आमंत्रित किया. वहीं अलाउद्दीन ने दर्पण में पद्मावती की परछाई देखी और मूर्च्छित हो गया. होश में आने पर राजा ने उसे महल के बाहरी द्वार तक विदा किया जहां बादशाह ने उसे धोखे से कैद कर लिया और दिल्ली के कारागार में डाल दिया.

कुंभलनेर का राजा देवपाल रतनसेन का शत्रु था. जब उसे पता चला कि रतनसेन अलाउद्दीन की कैद में है तो उसने पद्मावती के अपहरण की साजिश रची, जो कामयाब नहीं हुई.

रानी पद्मावती ने राजा के दो बहादुर साथियों गोरा-बादल से राजा को छुड़ाने की चाल चली. सोलह सौ पालकियों में सिपाहियों को लेकर उन्होंने बादशाह को खबर पहुंचाई कि रानी पद्मावती आपसे मिलना चाहती है पर सबसे पहले वे राजा से मिलेंगी. इन्हें अनुमति मिल जाती है और जिस पालकी में रानी के होने की बात थी उनमें लुहार थे जिन्होंने राजा की हथकड़ी बेड़ियां काट दीं और राजा को छुड़ाकर ले आये. चित्तौड़ पहुंचते ही राजा को देवपाल की साजिश का पता चलता और वह उसे सबक सिखाने कुंभलनेर जा पहुंचता है जहां रतनसेन के हाथों देवपाल मारा जाता है और देवपाल के हाथों रतनसेन वीरगति को प्राप्त होता है. पद्मावती तथा नागमती रतनसेन के साथ सती हो जाती है, तब तक बादशाह चित्तौड़ पहुंचता है और बादल सहित बचे सिपाहियों को मारकर जब गढ़ में दाखिल होता है तो उसके हाथों सिर्फ राख लगती है. पद्मावती भस्म हो चुकी थी.

प्रख्यात इतिहासकार मो. हबीब के अनुसार ई 1296 में अलाउद्दीन दिल्ली का सुल्तान बना और 1316 तक अपने निधन तक सुल्तान रहा.

जिस दिन अलाउद्दीन ने चित्तौड़ विजय का संकल्प लिया उस समय अमीर खुसरो उस अभियान में बादशाह के साथ थे. 'ख़ज़ाइनुल फुतुह' में चित्तौड़ की विजय पर अमीर खुसरो

'इतिहास के आईने में चित्तौड़ ही प्रचंड ज्वालाओं में धधकता दिखाई पड़ता है. दंतकथाओं के आईने में पद्मिनी-कथा कल्पित है, सत्य नहीं.'

लिखते हैं– 28 जनवरी 1303 को सुल्तान ने चित्तौड़ को कूच किया. सेना के दोनों बाजुओं के लिए आदेश हुआ कि किले के दोनों ओर शिविर लगा दें. शाही सेना दो मास तक आक्रमण करती रही किंतु विजय प्राप्त न हो सकी. चत्रवारी नामक पहाड़ी पर सुल्तान अपना श्वेत छत्र सूर्य के समान लगाता और सेना का प्रबंध करता. अंततः 25 अगस्त 1303 को सुल्तान किले में दाखिल हो गया. राय सुल्तान की सेवा में क्षमा याचना के लिए हाजिर हुआ. उसने राय को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया. पर 30 हजार लोगों की हत्या करवा दी. सात या आठ वर्ष के युवराज खिज्र खां को वहां का शासक घोषित कर चित्तौड़ का नाम खिज्राबाद रख दिया.

मूर्द्धन्य इतिहासज्ञ जयचंद्र विद्यालंकार लिखते हैं– समरसिंह के बेटे रतनसिंह को मेवाड़ की गद्दी पर बैठे अभी कुछ महीने ही बीते थे कि अलाउद्दीन ने चित्तौड़ को घेर लिया (1302 ई) छह महीने घिरे रहने के बाद जब रसद और पानी चुक गये तो किला उलाउद्दीन के हाथों आया. रतनसिंह मारा गया और उसकी रानी पदमिनी ने बहुत-सी स्त्रियों के साथ जौहर कर लिया. अलाउद्दीन ने चित्तौड़ का राज्य अपने बेटे खिज्र खां को देकर उसका नाम खिज्राबाद रक्खा– (इतिहासप्रवेश पृ. 235) प्रकांड विद्वान और मुगलकाल के गहन अध्येता श्री सेतुमाधवराव पगड़ी अपने लेख 'चितोडची पद्मिनी कल्पित की सत्य' में इस नतीज़े पर पहुंचते हैं– 'इतिहास के आईने में चित्तौड़ ही प्रचंड ज्वालाओं में धधकता दिखाई पड़ता है. दंतकथाओं के आईने में पद्मिनी-कथा कल्पित है, सत्य नहीं.'

अपने निष्कर्ष के प्रमाण स्वरूप उन्होंने मध्यकालीन इतिहासकारों, फिरिश्ता, अबुल फ़ज़ल, कुंभलगड प्रशस्ति, मुहणोत नैणसी, जियाउद्दीन बरनी, इसामी, अमीर खुसरो तथा कर्नल टॉड की रचनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया है. किंतु इन तमाम इतिहासकारों में एक अमीर खुसरो को छोड़कर सभी जायसी के बाद के हैं और इस सभी ने थोड़े-बहुत हेरफेर से पद्मावत की कहानी ही दुहरायी है. इनमें से भी कर्नल टॉड जो कि इतिहासकार नहीं हैं, वे ग्रीम मर्सर नामक एक अंग्रेज़ रेज़िडेट के स्टाफ में कार्यरत थे. मर्सर का काम भारतीयों में फूट डालने का था. जब उसकी नियुक्ति राजस्थान का सर्वे करने और राजस्थानी रियासतों को मराठों और मुसलमानों के विरुद्ध भड़काने के लिए हुई तब टॉड राजस्थान आया और उसने राजस्थान के इतिहास में गहरी रुचि दिखाई. राजस्थान के गौरवशाली अतीत से परिचय कराया पर उसकी कथाएं ऐतिहासिक आधारों पर न होकर जनश्रुतियों और चारणों-भाटों की गाथाओं पर अवलंबित

थी. और उसके लेखन का मुख्य उद्देश्य साम्प्रदायिक सद्भाव नष्ट करना था.

कर्नल टॉड की कपोल कल्पनाओं को प्रमाण मानकर हिंदी के सर्वश्रेष्ठ आलोचक और इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी पद्मावती की भूमिका में इतिहास को तोड़ मरोड़कर पेश किया. टॉड को प्रमाण मानकर शुक्लजी ने जो मासूम गलती की उसी को आधार बनाकर और शुक्लजी की भूमिका को ब्रह्मवाक्य मानकर आगे के तथाकथित विद्वज्जन पाठकों को भरमाते रहे और यह परम्परा अब तक जारी है. एकमात्र पं. इंद्र विद्यावाचस्पति ने जो स्वाधीनता सेनानी, गुरुकुल के आचार्य और इतिहासकार थे, पद्मावत के ऐतिहासिक आधार की बेहद प्रामाणिक और तथ्यपरक समीक्षा प्रस्तुत की है, किंतु दुर्भाग्य से हिंदी जगत इनके नाम से भी अनभिज्ञ है और पद्मावत के क्षेत्र में अब भी आचार्य शुक्ल की ही तूती बोलती है.'पद्मावत' की कहानी में इतिहास की दो घटनाएं हिलमिल गयी हैं, साथ ही संस्कृत साहित्य की अनेकानेक काव्य रूढ़ियों ने उसे बड़ी खूबसूरती से संवारा है. जायसी का पांडित्य अपनी पूर्णता में इस महाकाव्य में अभिव्यक्त हुआ है. हालांकि कुछ बेहद चुभनेवाले काव्यदोष और तथ्यात्मक भूलें भी रह गयी हैं.

जायसी से लगभग 237 वर्ष पहले अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर विजय पायी और दिल्ली वापस चला गया. उसने चित्तौड़ के राय रतनसेन को माफ कर दिया और उसकी पत्नियों के बारे में सोचा तक नहीं. युवराज खिज्र खां नाममात्र का शासक बना जो कभी चित्तौड़ में रहा ही नहीं. सुल्तान अलाउद्दीन ने रतनसेन के भांजे मालदेव पर शासन का भार सौंप दिया था जो सुल्तान के प्रति आजीवन स्वामिभक्त रहा. जब सुल्तान मृत्युशैया पर था तब राय मालदेव ने सुल्तान के अधिकारियों और सैनिकों के हाथपैर बांधकर दुर्ग के नीचे फिंकवा दिए और चित्तौड़ आज़ाद हो गया. मालदेव के निधन के बाद 1321 में सिसोदा के राणा हम्मीर ने मेवाड़ पर अपना आधिपत्य जमाया और भारत की आज़ादी तक उसके वंशज मेवाड़ पर हुकूमत करते रहे. अमीर खुसरों ने 'खज़ाइनुल फुतूह' में अलाउद्दीन की रणथम्बोर विजय का भी ज़िक्र किया है. 10 जुलाई 1301 को सुल्तान ने रणथम्बोर का किला फ़तह किया और रानी पद्मिनी और अन्य रानियों, ने जौहर किया. खुसरो लिखते हैं– 'पांच महीने की घेराबंदी के बाद किले के अनाज खत्म हो गये. किले में अकाल पड़ गया. राजा को संसार में रक्षा का कोई भी स्थान न दिखाई पड़ता था. उसने किले में आग जलवा कर अपनी स्त्रियों को आग में जलवा दिया. ये दो ऐतिहासिक घटनाएं जायसी के जेहन में ज़रूर रही होंगी.'

जायसी के जीवनकाल में मेवाड़ के राणा रतनसिंह और बूंदी के राव सूरजमल का युद्ध और उसमें दोनों का मारा जाना तथा रतनसिंह की रानी पंवार का सती होना एक ऐसी तात्कालिक घटना रही होगी जिसने जायसी को पद्मावत के कथानक का आधार प्रदान किया. पद्मावत में भी रतनसेन की मृत्यु कुंभलगड़ के राजा देवपाल के साथ युद्ध में होती है जिसमें दोनों ही मारे जाते हैं और रतनसेन की रानियां सती होती हैं.

कुंभलगढ़ या कुंभलनेर की स्थापना महाराणा कुंभा ने की थी जो अलाउद्दीन के समय तक पैदा ही नहीं हुए थे. जायसी ने सूरजमल को ही देवपाल बना दिया था क्योंकि अपने समकालीन व्यक्ति का नाम देना उन्हें उचित नहीं लगा होगा.

साहित्यकार को इस बारे में छूट रहती है कि वह अपने इतिहास और वर्तमान से किन घटनाओं और पात्रों को अपनी बात कहने के अनुकूल पाता है और अपनी सृजनात्मक कल्पनाशक्ति के द्वारा वह उनका उपयोग करता है. पर ज़्यादा असर वर्तमान का ही रहता है. इतिहास तो प्रभाव डालता है. अलाउद्दीन के युद्ध-वर्णन में जायसी ने तोपों और फिरंगी तोपचियों का जिक्र किया है जबकि अलाउद्दीन के काल तक तोपों का अस्तित्व ही नहीं था. तोपों का प्रयोग सोलहवीं सदी में यानी जायसी के काल में पुर्तगालियों और बाबर ने किया.

पं. इंद्र विद्यावाचस्पति के अनुसार, 'जायसी ने अपने पात्र राघवचेतन की कल्पना गुजरात के मंत्री माधव के चरित्र से की है.' महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने भी अपने 'राजूपताने का इतिहास' में 'पद्मावत' के ऐतिहासिक आधार का सार्थक विश्लेषण किया है और यह आचार्य शुक्ल के जायसी ग्रंथावली के पहले संस्करण के बाद ही प्रकाशित भी हुआ, यदि आचार्य शुक्ल एक बार इसे भी देख लेते तो सम्भवतः पद्मावत के इतिहास पर इतनी अनर्गल चर्चा नहीं होती. ❑

मनुष्य का इतिहास

ऐतिहासिक परिवर्तन चुनौतियों और प्रतिसादों से होते हैं. सभ्यताएं मात्र स्थितियों से परिभाषित नहीं होतीं, विभिन्न समस्याओं और संकटों से वे कैसे निपटती हैं, यह बात भी उन्हें परिभाषित करती है. किसी भी सभ्यता का अस्तित्व या सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह इन चुनौतियों का सामना कैसे करती है. मनुष्य का इतिहास चुनौतियों-प्रतिसादों की कहानी है.

– अर्नोल्ड टॉयन्बी

पद्मावत

● मलिक मुहम्मद जायसी

तहां देखु पद्मावति रामा। भौंर न जाइ, न पंखी नामा।।
अब तोहि देउं सिद्धि एक जोगू। पहिले दरस होइ, तब भोगू।।
कंचन-मेरु देखाव सो जहां। महादेव कर मंडप तहां।।
ओहि-क खंड जस परबत मेरू। मेरुहि लागि होइ अति फेरू।।
माघ मास, पाछिल पछ लागे। सिरी-पंचिमी होइहि आगे।।
उघरहि महादेव कर बारू। पूजिहि जाइ सकल संसारू।।
पद्मावति पुनि पूजै आवा। होइहि एहि मिस दीठि-मेरावा।।
तुम्ह गौनहु ओहि मंडप, हौं पद्मावति पास।
पूजै आइ बसंत जब तब पूजै मन-आस।।

राजै कहा दरस जौं पावौं। परबत काह, गगन कहं धावौं।।
जेहि परबत पर दरसन लहना। सिर सौं चढौं, पांव का कहना।।
मोहूं भावै ऊंचै ठाऊं। ऊंचै लेउं पिरीतम नाऊं।।
पुरुषहि चाहिय ऊंच हियाऊ। दिन दिन ऊंचे राखै पाऊ।।
सदा ऊंच पै सेइय बारा। ऊंचै सौ कीजिय बेवहारा।।
ऊंचै चढै, ऊंच खंड सूझा। ऊंचे पास ऊंच मति बूझा।।
ऊंचे संग संगति निति कीजै। ऊंचे काज जीउ पुनि दीजै।।
दिन दिन ऊंच होइ सो जेहि ऊंचे पर चाउ।
ऊंचे चढत जो खसि परै ऊंच न छांडिय काउ।।

हीरामन देइ बता कहानी। चला जहां पद्मावति रानी।।
राजा चला संवरि सो लता। परबत कहं जो चला परबता।।
का परबत चढि देखै राजा। ऊंच मंडप सोने सब साजा।।
अमृत सदाफर फरे अपूरी। औ तहं लागि सजीवन-मूरी।।
चौमुख मंडप चहूं केवारा। बैठे देवता चहूं दुवारा।।
भीतर मंडप चारि खंभ लागे। जिन्ह वै छुए पाप तिन्ह भागे।।
संख घंट घन बाजहिं सोई। औ बहु होम जाप तह होई।।
महादेव कर मंडप जग मानुस तहं आव।
जस हींछा मन जेहि के सो तैसे फल पाव।। (पद्मावत का एक अंश)